इकाई 11 भाषा विज्ञान का सामान्य परिचय

इकाई की रुपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 भाषाविज्ञान का उद्भव : एक संक्षिप्त परिचय

- 11.2.1 भाषाविज्ञान का अर्थ
- 11.2.2 भाषाविज्ञान का नामकरण
- 11.2.3 भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र
- 11.2.4 भाषाविज्ञानः विज्ञान है या कला ?

11.3 भाषा के रूप

11.4 वाक् : भाषा का मौलिक रूप

11.5 भाषा के दो आधार

11.6 भाषा के दो आश्रय

11.7 मानव एवं पशुओं की भाषाओं में अंतर

11.8 भाषाविज्ञान का क्षेत्र

11.9 भाषाविज्ञान के अंग

11.10 भाषाविज्ञान में अनुसंधान की पद्धति

11.11 भाषाविज्ञान की उपयोगिता

11.12 सारांश

11.13 कुछ अन्य उपयोगी पुस्तकें

11.14 अभ्यास प्रश्न

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप–

- भाषाविज्ञान के उद्भव का एक संक्षिप्त विवरण समझ पाएँगे।
- भाषाविज्ञान और भाषावैज्ञानिक/भाषाविद् का सही अर्थ बता सकेंगे।
- भाषाविज्ञान में किस प्रकार विज्ञान और कला दोनों निहित है ये समझ सकेंगे।
- भाषा के मौलिक रूप से अवगत होंगे।
- भाषा के दो आधारों एवं दो आश्रयों का तात्पर्य समझ पाएँगे।
- मानव भाषा एवं पशुओं की संचार प्रणाली में भेद कर पाएँगे।
- भाषाविज्ञान के विभिन्न अंगों से अवगत होंगे।
- भाषाविज्ञान की उपयोगिता की व्याख्या कर पाएँगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

11.1 प्रस्तावना

हम प्रायः बोलने की प्रक्रिया को चबाने, चाटने और चूसने की गतिविधियों के समान नहीं समझते हैं, लेकिन बोलने की तरह इन सभी क्रियाओं में किसी तरह के नियंत्रित तरीके से मुँह, दाँत, जीभ, और होंठों की गति शामिल होती है। अतः मौखिक भाषा और मुँह से जुड़े अंगों में इस तरह का सम्बन्ध स्थापित करके भाषा की उत्पत्ति के विषय में कोई भी दिलचस्प अनुमान लगाना तर्कहीन या असंभव प्रतीत नहीं होता। शायद इसी तरह के प्रयासों से भाषाविज्ञान के प्रति विद्वानों में रुचि उत्पन्न हुई और भाषा के अत्यंत गूढ़ और रहस्यपूर्ण आयाम अस्तित्व में आये। (Yule, 2010)

भाषा अध्ययन को केंद्र में रखकर भाषाविदों द्वारा वर्षों के शोध के फलस्वरूप प्राप्त हुई जानकारी का संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण चित्रण प्रस्तुत इकाई में किया गया है। इस इकाई में भाषाविज्ञान के उद्भव का लघु विवरण, भाषाविज्ञान और भाषाविद् का सही अर्थ, भाषा के मौलिक रूप तथा इसके आधारों एवं आश्रयों पर चर्चा, मानव भाषा एवं पशुओं की संचार प्रणाली में अंतर और भाषाविज्ञान के विभिन्न अंगों तथा उनकी उपयोगिताओं की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

11.2 भाषाविज्ञान का उद्भव : एक संक्षिप्त परिचय

Fromkin (2000, पृष्ठ 5) के अनुसार विश्व में ऐसे कई तथ्य उपलब्ध हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि मनुष्य प्रजाति ने इतिहास के प्रारंभिक कालों में विकसित होते ही मानव भाषा की प्रकृति में एक विशेष रुचि दर्शायी है। ऐसी कोई मानव संस्कृति नहीं है जिसने इस अद्वितीय मानव विशेषता पर दार्शनिक या व्यावहारिक विचार न प्रकट किये हों। इतिहास की अलग–अलग अवधियों में भाषा के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करते हुए इसके विभिन्न अंगों को परिलक्षित किया गया है। एक अत्यन्त प्रारंभिक उल्लेख से ज्ञात होता है कि 1700 ई.पू. में मिस्र के एक सर्जन ने मस्तिष्क की चोट के कारण उत्पन्न हुए भाषा विकारों का चिकित्सा से संबंधित विवरण दिया है। दूसरी ओर, प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने भाषा की उत्पत्ति और प्रकृति पर चिंतन कर इसके मौलिक स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। प्लेटो ने 427 से 348 ई.पू. के बीच अपने लेखन कार्यों में से एक क्रैटिलस संवाद (Cratylus Dialogue) को तात्कालिक भाषावैज्ञानिक संबंधित चर्चा के विषयों के लिए समर्पित किया है।

वहीं अरस्तू ने भाषा के आलंकारिक और दार्शनिक दोनों दृष्टिकोणों के संबंध में विचार प्रस्तुत किये हैं। अन्य यूनानी और रोमन विद्वानों ने भी व्याकरण लेखन द्वारा भाषा की ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों की संरचनाओं पर चर्चा की।

अतः भाषाविज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन और लेखन की यह अवधि प्राचीन काल से शुरू होकर मध्यकाल से होते हुए पुनर्जागरण (Renaissance) तक और उसके पश्चात वर्तमान काल तक बिना किसी अवरोध के जारी रही है।

भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन और विश्लेषण केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं था। भारत में संस्कृत भाषा बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में विस्तृत विश्लेषण का विषय थी। पाणिनी की संस्कृत व्याकरण (अष्टाध्यायी, 6–5 ई.पू.) को अभी भी सबसे बड़ी विद्वत भाषाई उपलब्धियों में से एक माना जाता है। इसके अलावा, चीनी और अरबी

विद्वानों ने भी मानव भाषा के परिप्रेक्ष्य में एक सराहनीय योगदान दिया और मानव भाषा को लेकर हमारी समझ में वृद्धि की।

उन्नीसवीं शताब्दी के भाषाविदों के प्रमुख प्रयास भाषा के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के लिए समर्पित थे परन्तु स्विस भाषाविद् फर्डिनेंड डी सॉस्योर (Ferdinand De Saussure, 1857–1913) ने अपना ध्यान भाषा के संरचनात्मक सिद्धांतों पर केंद्रित किया, न कि उन भिन्न–भिन्न तरीकों पर जिनके आधार पर भाषाएँ बदलती हैं और उनके नए रूपों का विकास होता है। उनके इन प्रयासों से बीसवीं सदी के भाषाविज्ञान पर एक प्रमुख प्रभाव पड़ा।

यूरोप और अमेरिका में, भाषाविदों ने अपने विश्लेषण के लिए भाषाओं के वर्णनात्मक एककालिक अध्ययन (Descriptive Synchronic Studies) और अनुभवजन्य तरीकों (empirical methods) के विकास की ओर रुख किया। विभिन्न विषयों के विद्वानों ने भाषा और भाषा के उपयोग के कई पहलुओं का विश्लेषण शुरू किया। सदी के पहले भाग में अमेरिकी भाषाविदों में नृवैज्ञानिक (nthropologist) एडवर्ड सपिर (Edward Sapir, 1884–1939), जो अमेरिका की भाषाओं, भाषा और संस्कृति, और समाज में भाषा के उपयोग में रुचि रखते थे, और लियोनार्ड ब्लूमफील्ड (Leonard Bloomfield, 1887–1949), जो खुद एक ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविद् (Historical and Comparative linguist) होने के साथ ही एक प्रमुख वर्णनात्मक भाषाविद् (Descriptive linguist) थे, इस अवधि में सबसे प्रभावशाली भाषाविद् के रूप में उभरे। सपिर और ब्लूमफील्ड दोनों ने ही भाषा के एक सामान्य सिद्धांत को विकसित करने में योगदान दिया। सापिर एक मनोवादी (Mentalist) थे, उनका मानना था कि किसी भी व्यवहार्य भाषाई सिद्धांत को भाषाई ज्ञान के मानसिक प्रतिनिधित्व (mental representation), इसकी "मनोवैज्ञानिक वास्तविकता" (psychological reality) के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। अपने बाद के वर्षों में ब्लूमफील्ड व्यवहारवाद (Behaviourism) के अनुयायी थे, जो उस समय मनोवैज्ञानिक विचारों की मुख्य धारा थी। यह एक ऐसा दृष्टिकोण था जिसने भाषा के मानसिक प्रतिनिधित्व को ही नहीं अपितु मन की वास्तविकता को भी नकार दिया था।

यूरोप में, रोमन जैकबसन (Roman Jakobson) 1896–1982), प्राग स्कूल ऑफ लिंग्विस्टिक्स (Prague School of Linguistic) के संस्थापकों में से एक, 1941 में अमेरिका आए और इस क्षेत्र के नए आयामों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मॉरिस हाले (Morris Halle) और गनर फैंट (Gunnar Fant) के साथ उनके सहयोग से स्वनिम विज्ञान (Phonology) में परिच्छेदक अभिलक्षणों (Distinctive Features) के एक सिद्धांत का जन्म हुआ, और हाले पिछले दशकों के अग्रणी स्वनिम–वैज्ञानिकों (phonologists) में से एक बने हुए हैं। इंग्लैंड में, डैनियल जोन्स (Daniel Jones, 1881–1967) और हैनरी स्वीट (Henry Sweet, 1845–1912) जैसे स्वन–वैज्ञानिकों (phoneticians) का भाषा की ध्वनि प्रणालियों के अध्ययन पर स्थायी प्रभाव पड़ा है।

1957 में सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स (Syntactic Structures) के प्रकाशन के साथ, नोम चॉम्स्की (Noam Chomsky) ने प्रजनक व्याकरण (Generative Grammar) के युग की शुरुआत कर एक ऐसा सिद्धांत स्थापित किया जिसने भाषाविज्ञान जगत में क्रांतिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया। व्याकरण का यह सिद्धांत न केवल तीव्र गति से प्रसिद्ध हुआ अपितु विस्तृत रूप में विकसित भी हुआ। यह मानव भाषा के अर्जन (acquisition), प्रतिनिधित्व (representation) और उपयोग के लिए जैविक आधार

(biological basis) का पक्षधर हैं। यह सार्वभौमिक सिद्धांतों (Universal Principles), जो सभी भाषाओं के वर्गों को एक समान रूप से बाध्य करते हैं, उन पर आधारित है। इसका प्रयास एक ऐसे वैज्ञानिक सिद्धांत को स्थापित करने का है जो स्पष्ट और व्याख्यात्मक हो।

वर्तमान समय में चॉम्स्की द्वारा प्रदत्त सिद्धांतों के साथ संज्ञानात्मक विज्ञान (Cognitive Science) के जुड़ जाने से भाषाविज्ञान नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है।

11.2.1 भाषाविज्ञान का अर्थ

मनुष्य सोचने तथा अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक, लिखित, या संकेतिक(Sign) क्षमता का प्रयोग करता है उसे भाषा कहते हैं। मनुष्य जीवन के किसी भी पहलू की परिकल्पना भाषा के बिना करना अत्यंत कठिन है। प्रत्येक मनुष्य एक या एक से अधिक भाषा का प्रयोग करता है। ऐसा कोई भी मानव समाज नहीं है जिसकी अपनी कोई भाषा न हो। अतः मानव भाषा समाज में मनुष्यों को एक दूसरे से जोड़ने में अहम भूमिका निभाती है।

द्विवेदी (2014, पृष्ठ 3) के अनुसार " भाषारूपी इस दैवी अंश के द्वारा ही मनुष्य इस संसार में सर्वोत्तम जीव माना जाता है। वह अपने वाग्–व्यवहार के द्वारा ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है। साथ ही वह चर और अचर जगत का स्वामी भी भाषा के कारण बना हुआ है। इससे भाषा के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है। वैदिक ऋषियों ने सर्वप्रथम ऋग्वेद (मंडल 10 सूक्त 125) में वाग् सूक्त के 8 मंत्रों में इस विषय की ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि वाक्–तत्व या भाषा ही वह दिव्य ज्योति है जो मानव को ऋषि, देवता या विद्वान बनाती है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यावहारिक दृष्टि से भाषा की कितनी उपयोगिता है।"

मानव भाषा मनुष्य प्रजाति की एक अनूठी विशेषता है जिसका अध्ययन सदियों से किया जा रहा है। मानव भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषा विज्ञान कहा जाता है। अतः भाषाविद् उस व्यक्ति को नहीं कहेंगे जो कई भाषाएँ बोल सकता है, हालाँकि कुछ भाषाविद् ऐसा कर पाने में समर्थ होते हैं और ऐसे व्यक्तियों को हम बहुभाषी कहते हैं।

इसके विपरीत, एक भाषाविद् वह वैज्ञानिक है जो भाषा के सभी पहलुओं– भाषा की संरचना, भाषा का उपयोग, भाषा का इतिहास, समाज में भाषा का स्थान इत्यादि पर अनुसंधान एवं अध्ययन करता है।

भाषाविद् इस प्रकार भाषा से जुड़े सभी प्रश्नों, जिज्ञासाओं और समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भाषाविद् किसी एक भाषा पर निर्भर नहीं रहता अपितु विश्व की अनेक भाषाओं का अध्ययन करता है। हालाँकि भाषाविज्ञान की विशेषता है कि जब आप एक भाषा का अध्ययन करते हैं तो उसके आधार पर विश्व की अन्य भाषाओं के स्वरूप एवं नियमों की भी विवेचना कर सकते हैं। ऐसा इसलिए संभव है क्योंकि हर मनुष्य भाषा की कुछ मूलभूत संरचनाओं में परस्पर समानताएँ हैं।

11.2.2 भाषाविज्ञान का नामकरण

भारत में भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का प्रचलन पाणिनि के समय से हुआ। पाणिनि संस्कृत वैयाकरण थे जिन्होंने ध्वनिविज्ञान, स्वर विज्ञान और आकृति विज्ञान के व्यापक

और वैज्ञानिक सिद्धांत दिए। उनके एक प्रसिद्ध ग्रंथ "अष्टाध्यायी " में, जिसकी रचना 6–5 वीं ई.पू. में हुई थी, संस्कृत के भाषा वैज्ञानिक पहलुओं का विवरण मिलता है। भाषा विज्ञान जगत में पाणिनि के कार्य का एक महत्वपूर्ण योगदान है। हालाँकि भाषाविज्ञान शब्द के उद्भव में पाश्चात्य विद्वानों की भूमिका है। 1856 ई. में सर विलियम जॉन्स (Sir William Jones) के संस्कृत, लैटिन, ग्रीक के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा आधुनिक भाषाविज्ञान का प्रारंभ हुआ। अतः वर्तमान भाषाविज्ञान पाणिनि के समय से बहुत ज्यादा विकसित एवं परिवर्तित हो चुका है। 19 वीं शताब्दी से भाषाविज्ञान के विभिन्न नाम सामने आए हैं। उदाहरण स्वरूप– कंपैरेटिव ग्रामर (Comparative Grammar), कंपैरेटिव फिलोलॉजी (Comparative Philology), ग्लॉसोलोजी (Glossology), ग्लोटोलॉजी (Glottology) इत्यादि। परंतु वर्तमान जगत में अंग्रेजी में इसे साइंस ऑफ़ लैंग्वेज (Science of Language) अथवा लिंग्विस्टिक्स (Linguistics) के नाम से जाना जाता है।

11.2.3 भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र

विद्वानों के मत में "विज्ञान" शब्द का सम्बन्ध मुख्यधारा के विज्ञान विषयों से है, जैसे– जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान आदि। कला और साहित्य से जुड़े विषयों के लिए "शास्त्र" शब्द का प्रयोग होता है, जैसे– अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, कामशास्त्र आदि। इस वर्गीकरण के सन्दर्भ में भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का अर्थ एवं प्रयोग भिन्न होना चाहिए परन्तु द्विवेदी (2014, पृष्ठ 14) का मत है कि भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र इस दोनों शब्दों को एक दूसरे की जगह बिना किसी आपत्ति के प्रयोग किया जा सकता है। उनके अनुसार वर्तमान समय में हिंदी में विज्ञान और शास्त्र की आधारभूत विषमता को भुला कर समानार्थक रूप में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण स्वरूप– भौतिक विज्ञान (Physics) और भौतिक शास्त्र, रसायन विज्ञान (Chemistry) और रसायन शास्त्र, मानव विज्ञान और मानव शास्त्र (Anthropology), समाज विज्ञान (Sociology) और समाज शास्त्र, मनोविज्ञान (Psychology) और मानस शास्त्र आदि।

11.2.4 भाषाविज्ञानः विज्ञान है या कला

भाषाविज्ञान का कितना अंश विज्ञान है और कितना विज्ञान रहित ये चर्चा पाठकों के लिए रोचक और लाभप्रद है। यह प्रश्न मन में आना स्वाभाविक है कि एक ओर तो हम भाषा के विश्लेषणात्मक अध्ययन को भाषाविज्ञान कहते हैं पर दूसरी ओर इसका पठन–पाठन भारत के अधिकांश शिक्षण संस्थाओं में कला के विषय के रूप में ही होता है। इस बहस को सुलझाने के लिए आवश्यक है कि हम विज्ञान और कला की मौलिक परिभाषा समझ लें।

शास्त्रों के अनुसार विज्ञान का अर्थ है "विशिष्ट ज्ञान", ऐसा ज्ञान जिसमें विकल्प तथा मतभेद का कोई स्थान नहीं है। वैज्ञानिक विश्लेषण से जनित ज्ञान शाश्वत और स्थायी होता है।

इसके विपरीत कला में विकल्प को स्थान दिया जाता है तथा मतों में भेद हो सकता है। अतएव शाश्वत मूल्य वाला किन्तु रसबोध से रहित ज्ञान विज्ञान की श्रेणी में आता है और परिवर्तनशील मूल्य वाला तथा रसबोध से युक्त ज्ञान कला की श्रेणी में आता है। इस परिप्रेक्ष्य में चिंतन करने से प्रतीत होता है कि भाषाविज्ञान को कला की श्रेणी में कम, विज्ञान की श्रेणी में अधिक रखना ही तर्कसंगत है। भाषा की ध्वनियों, पदों,

शब्दों, वाक्यों इत्यादि की व्याख्या और विश्लेषण यही भाषाविज्ञान के केंद्र में होता है, जिसके माध्यम से शोधकर्ता तात्त्विक निष्कर्ष पर पहुँचता है। किन्तु कल्पना की ऊँचाई, साहित्यिक अनुभूति, मनोरंजन आदि पहलुओं की विवेचना करना भाषाविज्ञान का लक्ष्य नहीं है।

विज्ञान के तीन तत्त्व जो इसकी प्रमाणिकता सिद्ध करने में उपयोगी हैं, भाषाविज्ञान में भी विद्यमान हैं।

1. सर्वांगीण विवेचन (Exhaustivenè): भाषाविज्ञान में भाषा की उपलब्ध सामग्री (data) का सर्वांगीण विश्लेषण द्वारा व्यापक विवेचन प्रस्तुत किया जाता है।
2. सामंजस्य (Consistency): विभिन्न सिद्धांतों एवं निष्कर्षों का नए निष्कर्षों के आधार पर विरोध नहीं किया जाता, अपितु उनमें सामंजस्य स्थापित किया जाता है।
3. लाघव (Economy): भाषाविज्ञान में निर्धारित शब्दावली के आधार पर अध्ययन एवं शोध होता है। अतः यह शब्द–लाघव की परम्परा को भी बनाये रखता है।

इन सभी तथ्यों के इतर यहाँ पर यह भी समझने की आवश्यकता है कि विज्ञान जो साहित्य को अमूमन कोई सहयोग नहीं करता, दोनों में एक प्रकार का विरोध देखा जाता है, वहीं भाषाविज्ञान साहित्य की विवेचना में भी कारगर सिद्ध होता है और इसका एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। भौतिकी तथा रसायन–विज्ञान के नियम और सिद्धांत जहाँ शाश्वत और सार्वभौमिक माने जाते हैं, वहीं भाषाविज्ञान के निष्कर्ष एवं सिद्धांत भाषा और काल पर निर्भर होते हैं। अतएव विभिन्न परिस्थितियों एवं अवधियों में वे पृथक हो सकते हैं। इस प्रकार भाषाविज्ञान भौतिकी इत्यादि विज्ञान की तुलना में पूर्ण रूप से विज्ञान नहीं है।

11.3 भाषा के रूप

भाषा मानव द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार की एक नियमबद्ध प्रणाली है जिसे मुख्यतः तीन रूपों में देखा जाता है– मौखिक भाषा, लिखित भाषा और संकेत भाषा। चूँकि लिखित भाषा की तुलना में मौखिक मौलिक है और इस पर अनुगामी इकाइयों में विस्तृत प्रकाश डाला गया है, इस इकाई में संकेत और लिखित भाषा का चित्रण करना उचित होगा।

संकेत भाषाएँ वे भाषाएँ हैं जो अर्थ व्यक्त करने के लिए दृश्य एवं हाथ–संबंधी संकेतों से निर्मित एक विशेष पद्धति का उपयोग करती हैं। गैर–हस्तचालित तत्वों (जैसे– शरीर, सिर, भौहें, आँखें, गाल और मुँह इत्यादि की मुद्राएँ या गतिविधियाँ) को हस्तचालित अभिव्यक्ति के साथ संयोजित करके इन्हें व्यक्त किया जाता है। संकेत भाषाएँ अपने स्वयं के व्याकरण और शब्दकोश के साथ पूर्ण विकसित प्राकृतिक भाषाएँ हैं। संकेत भाषाएँ सार्वभौमिक नहीं हैं। इसका अर्थ है कि एक जनसमुदाय की संकेत भाषा को दूसरी तरह की संकेत भाषा का प्रयोग करने वाला व्यक्ति नहीं समझ सकता। फिर भी संकेत भाषाओं में भी उल्लेखनीय समानताएँ होती हैं। भाषाविद् मौखिक और संकेत दोनों भाषाओं को प्राकृतिक भाषा के प्रकार मानते हैं, जिसका तात्पर्य है कि दोनों एक लम्बी अवधि में बिना किसी पूर्वनियोजित प्रक्रिया के माध्यम से विकसित हुई हैं। संकेत भाषा को शरीर की भाषा (जो एक प्रकार का अशाब्दिक संचार है) के साथ सम्मिलित नहीं करना चाहिए, क्योंकि दोनों एक–दूसरे से पृथक हैं।

लिखित भाषा एक लेखन प्रणाली के माध्यम से बोली जाने वाली या संकेत भाषा का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक आविष्कार है जिसे अभ्यास के माध्यम से ही सीखा जा सकता है। अतः बच्चों को इसमें दक्ष करने के लिए उन्हें इसे पढ़ाया जाना ही एकमात्र विकल्प है। एक लिखित भाषा केवल एक विशिष्ट मौखिक भाषा या संकेत भाषा के पूरक के रूप में मौजूद होती है, और कोई भी प्राकृतिक भाषा विशुद्ध रूप से लिखी नहीं जाती है।

11.4 वाक् : भाषा का मौलिक रूप

साक्षर समाज के व्यक्ति अक्सर भाषा को लेखन से जोड़ते हैं, और यह मानते हैं कि भाषा मुख्य रूप से लेखन है। हम में से कई लोग उस पारंपरिक धारणा में विश्वास रखते हैं जिसका तर्क है कि वाक् लेखन पर निर्भर है। संभवतः इन पारंपरिक भ्रांतियों का मुख्य कारण वो पुस्तकें और लिखित दस्तावेज हैं जिनके द्वारा अनेक भाषाओं का वर्णन तथा संरक्षण किया गया है। लिखित भाषा लगभग स्थिर होती है, जबकि बोले जाने वाली भाषा अलग–अलग क्षेत्रों और बोलने वालों के शैक्षिक स्तरों के अनुसार भिन्न होती है। बारीकी से जाँच करने पर हम पाते हैं कि लिखित भाषा भाषा का प्राथमिक रूप नहीं है। हम कई घटकों पर विचार कर सकते हैं जो इस तथ्य को समर्थन देंगे कि वाक् प्राथमिक है और लेखन गौण है। निम्नलिखित बिन्दु ध्यान देने योग्य हैं :

वाक् सार्वभौमिक है, लेखन कुछ समुदायों तक ही सीमित है। दुनिया में कई समुदाय हैं, खासकर एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में, जिनमें कोई लेखन प्रणाली नहीं है। भारत में, उदाहरण के लिए, अंडमान द्वीप समूह के जारवा और ओंगे जैसे कई आदिवासी समुदायों की अपनी कोई लिपि नहीं है, और अब वे हिंदी और मराठी जैसी भाषाओं के लिए उपयोग की जाने वाली देवनागरी लिपि को पढ़ना और लिखना सीख रहे हैं।

साक्षर समाजों में, हम पढ़ना और लिखना सीखने से बहुत पहले बोलना सीखते हैं।

मानव प्रजातियों के विकास में, वाक् बहुत पहले आया था; लेखन का आविष्कार अपेक्षाकृत हाल ही में हुआ था। जीव–वैज्ञानिकों के अनुसार, वाक् कम से कम 50,000 साल पहले आया था, जबकि लेखन का इतिहास लगभग 5,000 साल पुराना है।

बच्चे स्वाभाविक तौर से बोलना सीखते हैं। हालाँकि अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों को बोलना सिखाते हैं, लेकिन बच्चे वैसे भी वाक् हासिल कर लेते हैं। इसके विपरीत लेखन हमेशा सिखाया जाता है।

11.5 भाषा के दो आधार

सामान्यतः भाषा के दो आधार होते हैं। पहले को मानसिक (psychological aspect) और दूसरे को भौतिक (physical aspect) मान सकते हैं। एक स्तर हमारे विचारों से जुड़ा हुआ है तो दूसरे का सम्बन्ध हमारे उच्चारण से है। कोई भी विचार वाणी से व्यक्त करने से पहले हम उसे मन में सोचते हैं। इस प्रकार प्रथम स्तर सूक्ष्म अथवा अदृश्य होता है और द्वितीय स्तर स्थूल अथवा भौतिक अस्तित्व रखता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पहला स्तर जो मानसिक है वह भाषा की आत्मा है और दूसरा जो भौतिक है वह भाषा का शरीर है। मानसिक स्तर पर जो विचार या भाव

वक्ता के मन में उत्पन्न होते हैं उसकी अभिव्यक्ति करने लिए वह भाषा का प्रयोग करता है ताकि भाषा के भौतिक आधार के सहारे श्रोता उस विचार को समझ सके। भौतिक आधार का तात्पर्य है उन भाषा की सार्थक ध्वनियों से जिनके योग से शब्द या वाक्य बनता है, जिनका आधार लेकर वक्त अपने विचारों और भावों को प्रकट करता है।

उदाहरण स्वरूप "मीठा" एक शब्द है, जिसका एक अर्थ है। इस शब्द का उच्चारण करने वाले व्यक्ति के मन में इसका अर्थ होगा और उच्चारण के पश्चात श्रोता भी इसके अर्थ को अपने मन में ग्रहण कर लेगा। अतः शब्द "मीठा" का अर्थ ही मानसिक स्तर है। चूँकि मानसिक स्तर सूक्ष्म है और बिना किसी स्थूल माध्यम के यह श्रोता तक नहीं पहुँच सकता, वक्ता ध्वनि युक्त भाषा का प्रयोग करता है। अतः म+ई+ठ+आ, इन ध्वनि समूहों को, जो स्थूल हैं और भावों को वास्तविक रूप देकर श्रोता तक पहुँचाने के लिए प्रयोग होते हैं, भाषा का भौतिक स्तर कहा जाता है।

11.6 भाषा के दो आश्रय

1. वक्ताः किसी भी प्रकार के विचार या भाव जो मनुष्य के मन में उत्पन्न होते हैं उन्हें वह शाब्दिक रूप देकर भाषा के माध्यम से प्रकट करता है। इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम उसके मन में विचार पैदा होता है, जिसे संकल्पना (concept) कहते हैं। उसको मानसिक स्तर पर अर्थ पूर्ण ध्वनि समूहों या शब्दों में परिवर्तित किया जाता है, तत्पचात उस भाव को भौतिक रूप में वाग्यंत्र द्वारा उच्चारित किया जाता है। इसे भाषा का अभिव्यक्ति पक्ष कहा जाता है। भाषा का अभिव्यक्ति पक्ष मानव शरीर की एक अत्यंत जटिल और कुशल प्रक्रिया का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसके पीछे उसकी सम्पूर्ण ज्ञानार्जन–प्रक्रिया और वाग्यंत्रों का कुशलतापूर्वक संचालन है। मनुष्य अपने आसपास विद्यमान जनसमुदाय से शब्दों को सुनता है, ग्रहण करता है, उनका विश्लेषण कर अर्थ समझता है, तदुपरांत उस अर्थ को वस्तु के साथ संयोजित कर शब्दार्थ–सम्बन्ध को आत्मसात करता है। अंततः मस्तिष्क द्वारा भेजी गयी जटिल सूचना को वाग्यंत्र द्वारा भौतिक रूप देकर उच्चारण में परिवर्तित करता है।
2. श्रोताः संकल्पना के आधार पर जो शब्द ध्वनि–प्रक्रिया के द्वारा उच्चरित होता है, वह ध्वनि–तरंगों के माध्यम से श्रोता तक पहुँचता है। श्रोता की कर्णेन्द्रिय उसको ग्रहण करके मस्तिष्क के सहयोग से सार्थक ध्वनि के रूप में परिवर्तित करती है। तदुपरांत श्रोता के मन में वक्ता द्वारा उच्चरित भाव उत्पन्न होता है और उसके अर्थ का बोध होता है।

भाषा के अभिव्यक्ति पक्ष और बोधपक्ष की प्रक्रिया को देखकर प्रतीत होता है कि "संकल्पना" प्रक्रिया का आरम्भ और अंत दोनों है। मनुष्य संकल्पना के उच्चारण एवं प्रसारण के लिए वाग्–इन्द्रिय पर निर्भर है तो दूसरी ओर इसके ग्रहण के लिए कर्णेन्द्रिय का उपयोग करता है। इस सामंजस्य के आधार पर वक्ता जो भाव प्रकट करता है, श्रोता उन्हें उसी रूप में ग्रहण कर लेता है।

भाषा में द्विविध प्रक्रिया– अभिव्यक्ति पक्ष और बोधपक्ष, निरंतर काम करती है जो संवाद को विभिन्न बाधाओं के पश्चात भी इतना प्रभावी बनती है। बोधपक्ष के द्वारा व्यक्ति भावों के अर्थ को ग्रहण करता है और इसका सम्बन्ध मुख्यतः श्रोता से है। परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार एक ही व्यक्ति वक्ता और श्रोता दोनों की भूमिका में हो

सकता है। एक ही समय में वह अपने भावों को व्यक्त करने के लिए वक्ता, किन्तु दूसरे के भावों को समझने के लिए श्रोता हो सकता है।

11.7 मानव एवं पशुओं की भाषाओं में अंतर

कुछ जीवों के बारे में ऐसी कहानियाँ अथवा मान्यताएँ हैं कि वो मनुष्यों की तरह ही बात–चीत कर सकते हैं। हम आमतौर पर मानते हैं कि इस तरह की धारणाएँ कल्पना मात्र है क्योंकि जिन भी पक्षियों या जानवरों का इस सन्दर्भ में वर्णन किया जाता है वे मनुष्यों की भाषा का अनुकरण सिर्फ एक सीमित रूप में ही करने में समर्थ होते हैं। इसका तात्पर्य है कि प्राणी अपनी प्रजातियों के अन्य सदस्यों के साथ संवाद करने में सक्षम तो हैं पर मनुष्यों की भाँति नहीं। अतः मानव भाषा में अवश्य ही ऐसे गुण होते हैं जो इसे इतना अनोखा बनाते हैं कि यह किसी भी अन्य संचार प्रणाली से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होती है, और इसलिए किसी भी अन्य प्राणी द्वारा इसे सीखा नहीं जा सकता।

अब हम निम्नलिखित मानव भाषा के कुछ विशेष गुणों को देखते हैं जो इसे अन्य संचार प्रणाली से पृथक बनाते हैं। इनका उल्लेख मुख्यतः चार्ल्स एफ. हॉकेट (Charles F- Hockett) ने 1960 में किया था।

अंतरणता (Displacement): अंतरणता अथवा विस्थापन का तात्पर्य है कि मनुष्य उन चीजों के बारे में बात कर सकता है जो शारीरिक रूप से मौजूद नहीं हैं या फिर जो किसी भी रूप में मौजूद नहीं हैं। वक्ता अतीत और भविष्य के बारे में बात कर सकते हैं, और अपनी आशाओं और सपनों को व्यक्त कर सकते हैं। मानव की भाषा वर्तमान समय के क्रियाकलापों की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है। विस्थापन एक ऐसी विशेषता है जो मानव भाषा को नर–वानर सम्प्रेषण (primate communication) के अन्य रूपों से अलग करती है।

यादृच्छिकता (Arbitrariness): सामान्यतः भाषाई रूप और इसके अर्थ के बीच कोई "प्राकृतिक" संबंध नहीं होता है, और जो संबंध होता है वो असंगत अथवा मनमाना सा प्रतीत होता है। उदाहरण स्वरूप हिंदी शब्द "कुत्ता" के भाषाई रूप को देख कर यह कह पाना अत्यंत कठिन है कि इसका स्वाभाविक और स्पष्ट अर्थ कुत्ता है (जब तक की हमें ऐसे बोलना सिखाया न जाए), क्योंकि शब्द और इसके अर्थ (बालदार चार पैरों वाले भौंकने वाले जीव) में कोई प्राकृतिक या अनुसंकेतक (iconic) संबंध नहीं है। दुनिया में भाषाई संकेतों और वस्तुओं के बीच संबंध के इस पहलू को यादृच्छिकता के रूप में वर्णित किया गया है।

उत्पादकता (Productivity): उत्पादकता का अर्थ है कि मानव उसकी भाषा में कोई भी नया उच्चारण व किसी भी प्रकार का नया वाक्य बना यह समझ सकता है। मनुष्य इस प्रकार के असीमित उच्चारणों का निर्माण करने में सक्षम है। यही कारण है कि एक ही भाषा का विभिन्न कालों और अलग–अलग क्षेत्रों में नया रूप देखने को मिलता है। यह तथ्य इस बात को इंगित करता है कि भाषा स्थिर नहीं है अपितु भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के आधार पर इसके रूप और प्रयोग में परिवर्तन होता रहता है। नए मुहावरे हर समय बनाए जाते हैं और संकेतों के अर्थ संदर्भ और स्थिति के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।

सांस्कृतिक संचरण (Cultural Transmission): हालाँकि हम अपने माता–पिता से शारीरिक विशेषताओं जैसे कि भूरी आँखें और काले बाल प्राप्त कर सकते हैं, हमें उनकी भाषा विरासत में नहीं मिलती है।

हम भाषा का अर्जन किसी सांस्कृतिक परिवेश में रहते हुए अन्य वक्ताओं के साथ करते हैं न कि माता–पिता के जीन (gene) से। उदाहरण स्वरूप यदि जापानी माता–पिता का बच्चा जिसका जन्म जापान में हुआ है, किसी अँग्रेजी बोलने वाले इंलैण्ड के मूलनिवासी द्वारा गोद लिया जाता है और उसे बचपन से ही इंलैण्ड में पाला–पोसा जाता है तो बच्चे में भले ही अपने प्राकृतिक माता–पिता से विरासत में मिली भौतिक विशेषताएँ होंगी, पर वह सदैव अंग्रेजी भाषा ही बोलेगा। इसके विपरीत बिल्ली का बच्चा चाहे एक देश में जन्मा हो और उसके पश्चात् किसी अन्य देश में उसका पालन पोषण हो, इससे उसकी भाषा में कोई परिवर्तन नहीं होगा, वह हर हाल में किसी भी सामाजिक परिवेश में "म्याऊ" शब्द का उच्चारण ही करेगा। यह प्रक्रिया जिससे एक भाषा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारित किया जाता है, सांस्कृतिक प्रसारण कहलाती है।

द्वैतता (Duality): मानव भाषा के उच्चारण में दो स्तर या परतें हैं। भाषा के इस गुण को द्वैत कहा जाता है। वाक् उत्पादन (speech production) में, हमारे पास एक भौतिक स्तर होता है जिस पर हम अलग–अलग ध्वनियों का उत्पादन कर सकते हैं, जैसे कि "न", "ब" और "इ"। व्यक्तिगत ध्वनियों के रूप में, इन असतत (discrete) रूपों में से किसी का कोई आंतरिक अर्थ नहीं है अथवा ये निरर्थक हैं। एक विशेष तरीके से संयोजित कर अंग्रेज़ी भाषा में हम इन असतत ध्वनियाँ से एक शब्द "बिन" (bin) और दूसरा "निब" (nib) बना सकते हैं जिनके अर्थ अलग–अलग हैं। उच्चारण का यह स्तर सार्थक है। इस प्रकार एक स्तर पर हमारे पास अलग–अलग ध्वनियाँ हैं, और दूसरे स्तर पर हमारे पास अलग–अलग अर्थ हैं। इस द्वैतता को "अभिरचना–द्वैधता" कहते हैं, जो वास्तव में मानव भाषा की सबसे किफायती विशेषताओं में से एक है। भाषा की इस विशेषता के कारण असतत ध्वनियों के सीमित समुच्चय (set) के साथ भी हम बहुत बड़ी संख्या में सार्थक ध्वनि संयोजनों (जैसे विभिन्न शब्दों) का उत्पादन करने में सक्षम हैं।

वाक्छल (Prevarication): वाक्छल झूठ बोलने या धोखा देने की क्षमता को कहा जाता है। भाषा का प्रयोग करते समय मनुष्य मिथ्या या अर्थहीन वचन बोल सकता है। यह पशु संचार और मानव संचार यानी भाषा के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। अतः पशु संचार में झूठ बोलना या कुछ ऐसा व्यक्त करना जिसका वास्तविक जगत में अस्तित्व ही नहीं है सम्भव नहीं है।

अधिगम्यता (Learnability): इस विशेषता के अनुसार भाषा को सीखा और सिखाया जा सकता है। जिस तरह एक वक्ता (speaker) अपनी पहली भाषा सीखता है, उसी तरह वक्ता दूसरी भाषाओं को सीखने में सक्षम होता है। यह ध्यान देने योग्य है कि छोटे बच्चे सामर्थ्य और सहजता के साथ भाषा सीखते हैं। हालाँकि, भाषा अर्जन एक महत्वपूर्ण अवधि (critical period) के नियम से भी बाधित होता है, और उस अवधि के बीत जाने के बाद बच्चों के लिए भाषा सीखना कठिन हो जाता है।

प्रतिबिंबन (Reflexivene) मनुष्य अपनी ही भाषा के बारे में बात करने के लिए भाषा का उपयोग कर सकता है। मानव भाषा की यह एक और अद्भुत विशेषता, जिसे प्रतिबिंबन कहते हैं, पशुओं की संचार प्रणाली में नहीं पायी जाती। प्रतिबिंबन के गुण

का प्रयोग करते हुए मनुष्य यह बता सकता है कि भाषा क्या है, भाषा की संरचना कैसी है और अन्य लोगों के साथ भाषा के विचार पर चर्चा कर भी सकता है।

अर्थत्व (Semanticity): जब हम किसी भी विचार, वस्तु, या घटना को किसी प्रतीक के द्वारा प्रकट करते हैं तो इस प्रक्रिया को अर्थत्व कहा जाता है। सरल शब्दों में, मानव भाषा का अर्थत्व का गुण एक यादृच्छिक प्रतीक और वास्तविक दुनिया में किसी क्रिया या वस्तु के बीच अद्वितीय संबंध को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, क्रिया "चलना" (walk) एक पैर को दूसरे के सामने ले जाने की क्रिया को इंगित करता है, और रंग लाल हमें रुकने (stop) के लिए बाधित करता है। अतः अर्थत्व केवल एक प्रतीक या वस्तु के द्वारा किसी क्रिया को समझाने में मदद करता है।

विवित्तता (Discreteness): मानव भाषा का स्वरूप कुछ ऐसा है कि बड़ी से बड़ी इकाई को छोटी से छोटी असतत इकाइयों में तोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए "वाक्यों" को शब्दों में और "शब्दों" को ध्वनि की इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है। इसे विवित्तता या बहुघकटता कहते हैं जो पशुओं की संचार प्रणाली में नहीं मिलता। परिणाम स्वरूप पशुओं के संवाद में ध्वनि–संकेत निश्चित (fixed) होते हैं और उन्हें किसी भी प्रकार के विभाजन द्वारा छोटा या बड़ा नहीं किया जा सकता।

11.8 भाषाविज्ञान का क्षेत्र

अब तक प्रस्तुत किये गए तर्कों से यह स्पष्ट हो गया होगा कि भाषा विज्ञान का सम्बन्ध केवल मानव–मात्र भाषा और इसके विभिन्न पहलुओं से है। एक अनुमान के अनुसार विश्व में लगभग 6500 अलग–अलग मानव भाषाएँ हैं। अतः इस आंकड़े के आधार पर कहा जा सकता है कि अन्य विज्ञानों के अनुरूप भाषाविज्ञान का क्षेत्र भी अत्यंत विस्तृत है। विश्व की समस्त भाषाओं का अध्ययन करना, उनका विश्लेषण एवं विस्तृत व्याख्या करना, भाषाओं के उद्भव और विकास पर शोध करना, उनकी परस्पर तुलना के आधार पर उनमें आनुवंशिक (genealogical), प्ररूपात्मक (typological) इत्यादि संबंधों को स्थापित करना, भाषा एक मनुष्य तथा विशेष जनसमुदाय द्वारा कैसे प्रयोग में लायी जाती है आदि अनेक विषयों पर तथ्यात्मक दृष्टि से चिंतन करना भाषा विज्ञान की सीमा में आता हैं। कुछ व्यक्ति केवल साहित्यिक एवं प्रचलित भाषाओं को ही भाषा की दृष्टि से देखते हैं। परन्तु भाषाविज्ञान में किसी प्रतिष्ठित भाषा (language) जो एक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है और आम बोलचाल की बोली (dialect) जिसका दायरा अपेक्षाकृत सीमित है, किसी ग्रामीण अथवा कम विकसित क्षेत्र में फैली हुई है, दोनों को ही एक सामान दृष्टि से देखा जाता है और गंभीरता से अध्ययन किया जाता है क्योंकि दोनों ही मनुष्य द्वारा प्रयोग में लायी जाती हैं और इसलिए भाषा या बोली दोनों की प्रवृति मूल रूप से सामान है।

भाषावैज्ञानिकों की रुचि भाषा की वर्तमान अवस्था और रूप तक सीमित नहीं होती अपितु वे उसके ऐतिहासिक पहलुओं को भी उजागर करते हैं। भाषा वैज्ञानिक वक्ता की भाषा के कुछ विशिष्ट पहलुओं का अध्ययन कर उसकी प्रवृत्ति, मनोदशा और मस्तिष्क में होने वाली कुछ गतिविधियों का वर्णन कर सकता है। इसी प्रकार भाषा के आधार पर मनुष्य के विभिन्न दार्शनिक एवं अन्य गूढ़ प्रवृत्तियों का विश्लेषण भाषाविज्ञान प्रस्तुत करता है, जिसकी अपेक्षा किसी और विज्ञान से नहीं की जा सकती। इसी क्रम में भाषाविज्ञान के कुछ बहुप्रचलित अंगों के माध्यम से इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

11.9 भाषाविज्ञान के अंग

इसी क्रम में भाषाविज्ञान के कुछ बहुप्रचलित अंगों का संक्षिप्त विवरण दिया है, और उनमें से कुछ अत्यंत मौलिक एवं महत्वपूर्ण अंगों का विस्तृत वर्णन आगे की इकाइयों में किया गया है।

स्वनविज्ञान (Phonetics): वह विज्ञान जो मानव ध्वनि–निर्माण की विशेषताओं का अध्ययन करता है, विशेष रूप से वाक् में प्रयुक्त होने वाली ध्वनियाँ, और उनके विवरण, वर्गीकरण और प्रतिलेखन के लिए विधियाँ प्रदान करता है। इसे तीन भागों में विभाजित किया गया है: (क) उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान (Articulatory Phonetics)– यह वाग्यंत्र द्वारा वाक् ध्वनियों के उच्चारण या व्यक्त करने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है, (ख) भौतिक स्वनविज्ञान (Acoustic Phonetics)– यह वाक् ध्वनि के भौतिक गुणों का अध्ययन करता है, जो मुँह और कान के बीच प्रेषित होती है, (ग) श्रवणात्मक स्वनविज्ञान (Auditory Phonetics)– वाक् ध्वनियों की अवधारणात्मक प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है, जो कान से श्रवणतंत्रिका द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचती है।

स्वनिमविज्ञान (Phonology): भाषाविज्ञान की यह शाखा उन ध्वनि प्रणालियों अथवा ध्वनि सिद्धांतों का अध्ययन करती है जिनके आधार पर ध्वनियों को भाषा में संयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी भाषा में पाई जाने वाली भेदक ध्वनि के स्वरूप (pattern) को प्रदर्शित करना और दुनिया की भाषाओं में ध्वनि प्रणालियों की प्रकृति के बारे में यथासंभव सामान्य कथन करना है।

रूपविज्ञान (Morphology): व्याकरण की वह शाखा जो शब्दों के रूप तथा संरचना का अध्ययन करती है। इस विश्लेषण में मुख्य रूप से रूपिम (morpheme) की रचना पर ध्यान केंद्रित कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है। इसे सामान्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है– विभक्ति रूपिम का अध्ययन (Inflectional Morphology) और शब्द–निर्माण रूपिम (Lexical or Derivational Morphology) का अध्ययन में। जैसे "गया" (जो की एक क्रिया है) में "आ" रूपिम विभक्ति प्रत्यय है, जिससे पता चलता है कि जिस वाक्य में यह क्रिया प्रयोग हुई होगी उसके कर्त्ता पुल्लिग और एकवचन में है और क्रिया समाप्त हो चुकी है।

वाक्यविज्ञान (syntax): किसी भाषा में वाक्य बनाने के लिए शब्दों को संयोजित करने के तरीके को नियंत्रित करने वाले नियमों के अध्ययन के लिए एक पारंपरिक शब्द प्रयोग होता है जिसे वाक्यविज्ञान कहा जाता है। एक अन्य परिभाषा के अनुसार यह वाक्य संरचना (sentence structure) के तत्वों और अनुक्रमों में वाक्यों की व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले नियमों के बीच अंतर्संबंधों का अध्ययन है।

अर्थविज्ञान (Semantics): भाषा में अर्थ के अध्ययन के लिए समर्पित भाषाविज्ञान की एक प्रमुख शाखा को अर्थविज्ञान कहते हैं। शब्द का प्रयोग दर्शन (philosophy) और तर्क (logic) में भी किया जाता है, लेकिन भाषाविज्ञान के समान विस्तृत सन्दर्भ में और गहनता के साथ नहीं। दार्शनिक अर्थविज्ञान भाषाई अभिव्यक्तियों और दुनिया में उन घटनाओं के बीच संबंधों की जाँच करता है जिनका वे उल्लेख करते हैं, और उन परिस्थितियों पर विचार करते हैं जिनके तहत इस तरह के भावों को सही या गलत कहा जा सकता है, और उन घटकों का भी मूल्याङ्कन करता है जो भाषा की व्याख्या को प्रभावित करते हैं। भाषाविज्ञान में, प्राकृतिक भाषाओं के शब्दार्थ गुणों के अध्ययन पर जोर दिया जाता है।

समाज–भाषाविज्ञान (Sociolinguistics): भाषाविज्ञान की यह शाखा भाषा और समाज के बीच संबंधों के सभी पहलुओं का अध्ययन करती है। समाज–भाषावैज्ञानिक सामाजिक समूहों की भाषाई पहचान, भाषा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, भाषा के मानक और गैर–मानक रूपों, राष्ट्रीय भाषा के उपयोग के स्वरूप और जरूरतें, भाषा की सामाजिक किस्में और स्तर, बहुभाषिता का सामाजिक आधार आदि विषयों का अध्ययन करते हैं।

मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics): यह शाखा जो भाषाई व्यवहार और उस व्यवहार को समझने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बीच संबंध का अध्ययन करती है। मनोभाषाविज्ञान का अध्ययन दो संभावित दिशाओं में किया जा सकता है। कोई व्यक्ति मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को स्पष्ट करने के साधन के रूप में भाषा का उपयोग कर सकता है (उदाहरण के लिए भाषा स्मृति, अनुभूति, ध्यान, सीखने की प्रक्रिया आदि को कैसे प्रभावित करती है)। इसके इतर कोई भाषा के उपयोग पर मनोवैज्ञानिक बाधाओं के प्रभावों की जाँच कर सकता है (उदाहरण के लिए स्मृति सीमाएं, वाक् उत्पादन और समझ को कैसे प्रभावित करती हैं)। बाल भाषा अर्जन (Child Language Acquisition) अथवा प्रथम भाषा अर्जन (First Language Acquisition), जिसमें बच्चे द्वारा भाषा सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया और उसके विभिन्न चरणों का वर्णन सम्मिलित है, की विस्तृत विवेचना भी मनोभाषाविज्ञान में की जाती है।

तंत्रिका भाषाविज्ञान (Neurolinguistics): भाषाविज्ञान की एक शाखा जो भाषा के विकास और उपयोग के मस्तिष्क संबंधी (neurological) आधार का अध्ययन करती है। इसमें बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने और संकेत भाषा के प्रयोग की प्रक्रियाओं पर मस्तिष्क के नियंत्रण का एक प्रतिरूप (model) बनाने का प्रयास किया जाता है। इस क्षेत्र की एक बहुप्रचलित विधि के अंतर्गत भाषाविद् मस्तिष्क की चोट के कारण उत्पन्न हुए भाषा विकारों का अध्ययन एवं विश्लेषण करते हैं।

संकेतविज्ञान (Semiotics): संकेतविज्ञान संकेत प्रक्रियाओं का अध्ययन है, जो कि कोई भी गतिविधि, आचरण, या प्रक्रिया है जिसमें संकेत शामिल हैं, जहाँ एक संकेत को किसी भी चीज़ के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक अर्थ का संचार करता है। अर्थ जानबूझकर हो सकता है जैसे कि एक विशिष्ट अर्थ के साथ बोला गया शब्द, या अनजाने में, जैसे कि एक लक्षण किसी विशेष चिकित्सा स्थिति का संकेत है। संकेत किसी भी इंद्रियों के माध्यम जैसे कि दृश्य, श्रवण, स्पर्श, घ्राण, या स्वाद से संवाद कर सकते हैं।

संकेतप्रयोगविज्ञान (Pragmatics): संकेतप्रयोगविज्ञान भाषाविज्ञान और संकेतविज्ञान का एक उपक्षेत्र है जो अध्ययन करता है कि संदर्भ अर्थ में कैसे योगदान देता है। अर्थविज्ञान के विपरीत, जो किसी दिए गए भाषा में पारंपरिक या "कोड किये हुए" (coded) अर्थ की जाँच करता है, संकेतप्रयोगविज्ञान दर्शाता है कि अर्थ का संचरण न केवल वक्ता और श्रोता के संरचनात्मक और भाषाई ज्ञान (व्याकरण, शब्दकोश, आदि) पर निर्भर करता है बल्कि उच्चारण का संदर्भ, इसमें शामिल लोगों के बारे में कोई पूर्व–विद्यमान ज्ञान, वक्ता का अनुमानित इरादा और अन्य कारक भी अर्थ को स्पष्ट करने में योगदान देते हैं। इस प्रकार संकेतप्रयोगविज्ञान बताता है कि उपयोगकर्ता भाषा में विद्यमान अस्पष्टता को दूर करने में इसलिए सक्षम होता है क्योंकि अर्थ उच्चारण के तरीके, स्थान, समय आदि पर भी निर्भर करता है और उपयोगकर्ता इसी का सहारा लेता है।

संगणक भाषाविज्ञान (Computational Linguistics): भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसमें भाषाई और ध्वन्यात्मक समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिए संगणकीय तकनीकों और अवधारणाओं को लागू किया जाता है। इस शाखा के अंतर्गत कई शोध क्षेत्र विकसित हुए हैं, जिनमें प्रकृत भाषा संसाधन (Natural Language Processing), ध्वनि/वाक् संश्लेषण (Speech Synthesis), ध्वनि/वाक् अभिज्ञान (Speech Recognition), स्वचालित अनुवाद (Automatic Translation), शब्द–अर्थ सन्दर्भ सूची बनाना (making of concordances), व्याकरण का परीक्षण, और कई क्षेत्र जहाँ सांख्यिकीय गणना और विश्लेषण की आवश्यकता होती है (उदाहरण के लिए साहित्यिक पाठ्य अध्ययन)।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (Historical Linguistics): इस शाखा के अंतर्गत भाषा के विकास और विभिन्न कालों में भाषाओं की संरचना, रूप इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। इसे डाइक्रोनिक भाषाविज्ञान (Diachronic Linguistics) भी कहा जाता है।

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics): भाषाविज्ञान की इस शाखा की प्राथमिकता है मानव जीवन से सम्बंधित विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली भाषा से जुड़ी समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिए भाषाई सिद्धांतों, विधियों और निष्कर्षों का प्रयोग करना। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की सबसे अच्छी तरह से विकसित शाखा विदेशी भाषाओं का शिक्षण है, और कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग ऐसे किया जाता है जैसे कि भाषाओं का शिक्षण ही एकमात्र क्षेत्र इसमें शामिल में है। लेकिन कई अन्य क्षेत्र भी तेजी से उभरे हैं तथा अपनी अलग पहचान बनायी है। जिनमें भाषा विकारों (नैदानिक भाषाविज्ञान / Clinical Linguistics) का भाषाई विश्लेषण, मातृभाषा शिक्षा में भाषा का उपयोग, शब्दावली निर्माण (Lexicography), अनुवाद और शैलीविज्ञान (Stylistics) आदि शामिल हैं।

क्षेत्र–कार्य भाषाविज्ञान (Field Linguistics): क्षेत्र–कार्य भाषाविज्ञान में अपेक्षाकृत प्राकृतिक परिस्थितियों में सामान्य वक्ताओं से अपेक्षाकृत कम अध्ययन की गई भाषा के बुनियादी व्याकरण संबंधी तथ्यों पर प्राथमिक भाषा सामग्री (data) का संग्रह किया जाता है। ऐसी सामग्री का विश्लेषण, प्रसार और संरक्षण किया जाता है। इस प्रकार के भाषा सामग्री संग्रह को आमतौर पर "फ़ील्डवर्क" (fieldwork) कहा जाता है। क्षेत्र–कार्य भाषाविज्ञान का मुख्य लक्ष्य भाषाओं का बुनियादी एवं प्राथमिक विवरण तैयार करना है।

न्यायालयिक भाषाविज्ञान (Forensic Linguistics): अपराधों की जांच के लिए भाषाई तकनीकों का उपयोग जिसमें भाषा सामग्री साक्ष्य का हिस्सा बनती है, जैसे कि व्याकरणिक या शाब्दिक मापदंडों द्वारा पुलिस के बयानों को प्रमाणित करना। न्यायालयिक ध्वन्यात्मकता के क्षेत्र को अक्सर एक अलग क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है, जो वक्ता की पहचान, वॉयस लाइन–अप (voice line&ups), स्पीकर का प्रोफाइल बनाना (speaker profiling), टेप की गुणवत्ता बढ़ाना (tape enhancement), टेप की प्रमाणिकता जाँचना और विवादित बयानों को डिकोड करने जैसे मामलों से निपटता है।

प्रोक्ति विश्लेषण (Discourse Analysis): भाषा अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में जहाँ भाषा के अलग–अलग हिस्सों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है– जैसे शब्द और वाक्यांश या शब्द बनाने वाले ध्वनियाँ, वहीं प्रोक्ति विश्लेषण में एक वक्ता और श्रोता (या एक लेखक के पाठ और उसके पाठक) के बीच आपसी बातचीत का विश्लेषण

होता है। बातचीत के संदर्भ के साथ–साथ क्या कहा जा रहा है, इसे भी ध्यान में रखा जाता है। इस संदर्भ में एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को भी शामिल किया जा सकता है, जैसे कि संभाषण के समय वक्ता के स्थान तथा उसकी शरीर की भाषा जैसे अशाब्दिक संकेत शामिल हैं, और पाठ संचार के मामले में, इसमें चित्र और प्रतीक भी शामिल हो सकते हैं।

जैव–भाषाविज्ञान (Biolinguistics): भाषाविज्ञान की एक विकासशील शाखा जो भाषा के विकास और मानव द्वारा इसके उपयोग के लिए जैविक पूर्वावश्यकता का अध्ययन करती है। इस अध्ययन में मानव प्रजाति के उद्‌भव में भाषा की भूमिका और भाषा का व्यक्तिगत विकास दोनों दृष्टिकोण अनिवार्य होते हैं। इसे जैविक भाषाविज्ञान (biological linguistics) के रूप में भी जाना जाता है। कुछ सामान्य विषय जिनका अध्ययन जीव–भाषाविज्ञान में होता है– भाषा का आनुवंशिक संचरण (genetic transmission of language), भाषा उत्पादन के न्यूरोफिज़ियोलॉजिकल मॉडल (neurophysiological model), मानव और अन्य प्रजातियों के बीच शारीरिक समानताएँ, और भाषा व्यवहार के रोग संबंधी रूपों (pathological forms of language behaviour) का विकास आदि।

11.10 भाषाविज्ञान में अनुसंधान की पद्धति

भाषाविज्ञान मुख्य रूप से भाषा का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भाषाविद् भाषा की विशेषताओं का वर्णन और व्याख्या करता है, और बिना किसी व्यक्तिपरक धारणा के किसी विशेषता को "अच्छा" या "बुरा" कहकर चिन्हित नहीं करता। यह अन्य विज्ञानों में अभ्यास के समान है– जैसे की प्राणी–विज्ञानी एक व्यक्तिपरक निर्णय किए बिना जानवरों के साम्राज्य का अध्ययन करता है तथा किसी विशेष प्रजाति को दूसरे की तुलना में "बेहतर" या "बदतर" सिद्ध नहीं करता है।

भाषाविद् नियामकों (Prescriptive Rules) का भी वर्णन करते हैं ताकि किसी विशिष्ट भाषा के नियमों की चर्चा कर उसे सीखने और सिखाने में योगदान दे सके। इस प्रकार उस भाषा को विस्तृत क्षेत्र में फैलाने में और अलग–अलग जनसमुदायों के बीच संवाद को सरल बनाने में सहायता करता है।

स्रोत

अधिकांश भाषाविद् इस धारणा के तहत काम करते हैं कि लिखित भाषा सामग्री (written language data) की तुलना में वाक् (भाषा) सामग्री (spoken language data) और संकेत भाषा सामग्री (sign language data) अधिक मौलिक हैं। फिर भी लिखित सामग्री की महत्ता को ध्यान में रख कर इसका भी प्रयोग शोध में होता है। उदाहरण के लिए संगणक भाषाविज्ञान (Computational Linguistics) शोध में बड़ी मात्रा में भाषाई सामग्री को संसाधित करने के लिए लिखित भाषा अक्सर अधिक सुविधाजनक होती है।

विश्लेषण

20 वीं शताब्दी से पहले, भाषाविदों ने भाषा के ऐतिहासिक विश्लेषण को महत्त्व दिया। इसका मतलब है कि वे भाषाई विशेषताओं की तुलना करते थे और इससे समझने का प्रयास करते थे कि भाषा के रूपों में अलग–अलग काल में परिवर्तन कैसे आया।

हालाँकि, 20 वीं शताब्दी में सॉस्योर (Saussure) के समय में भाषा–वैज्ञानिकों का ध्यान समकालिक दृष्टिकोण पर स्थानांतरित हो गया। जहाँ अध्ययन एक ही समय में मौजूद विभिन्न भाषाओं के विश्लेषण और तुलना की दिशा में अधिक केंद्रित था।

11.11 भाषाविज्ञान की उपयोगिता

भाषा से सम्बंधित सभी जिज्ञासाओं को शांत करने में भाषाविज्ञान की विशिष्ट भूमिका है। भाषा की उत्पत्ति और मानव जीवन–शैली को विकसित बनाने में भाषा की भूमिका को उजागर करने में, प्राचीन इतिहास, संस्कृति और सभ्यता को जानने में, वेदों, शास्त्रों और साहित्यों की व्याख्या को सहज रूप में प्रस्तुत करने में, समाज में भाषा से जुड़ी प्रतिष्ठा व अप्रतिष्ठा जैसी विषमताओं को मिटाकर और विभिन्न भाषाओं की परस्पर समानताओं की व्याख्या कर मानव समाज में एवं विश्व स्तर पर बंधुत्व की भावना विकसित करने में, भाषा की लिपि के विकास में, संचार–साधनों का उपयोगी सहायक बनने में, कृत्रिम भाषा को विकसित कर आधुनिक मशीनों के उत्पादन में, भाषा के मनोवैज्ञानिक अस्तित्व और मस्तिष्क के साथ इसके सम्बन्ध को उजागर करने इत्यादि क्षेत्रों में भाषाविज्ञान ने अतुलनीय योगदान दिया है।

विगत दशकों में भाषाविज्ञान की उपयोगिता बढ़ी है, जिसके फलस्वरूप वर्तमान युग में निम्नलिखित क्षेत्रों में एक भाषाविद् व्यावसायिक संभावनाएँ खोज सकता है।

उच्च शिक्षा–संस्थानों व विश्वविद्यालयों में भाषाविज्ञान के प्राध्यापक के रूप में इसकी मुख्य शाखाओं का अध्यापन किया जा सकता है।

भाषा–शिक्षण एक बहुप्रचलित क्षेत्र है जिसमें प्रथम, द्वितीय, विदेशी, इत्यादि भाषाओं के शिक्षण की प्रचुर संभावनाएँ उपलब्ध हैं।

कम बोले जानी वाली भाषाओं को विधिवत तरीके से भाषा–प्रलेखन (language documentation) द्वारा भाषाविद् ही संग्रहित कर सकता है।

किसी विशिष्ट भाषा के कई पहलुओं जैसे– स्वनविज्ञान, स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान, समाज में भाषा का उपयोग, या फिर वर्णनात्मक व्याकरण, आदि का वर्णन करने के लिए भाषाविद् पुस्तकों का प्रकाशन कर सकता है।

प्रकाशन संस्थाओं व अन्य सरकारी कार्यालयों में भाषा–अनुवादक की आवश्यकता होती है। इस तरह का कार्य करने में भी भाषाविद् निपुण होता है।

वाक्–विकृतिविज्ञान (speech pathology) भी भाषाविज्ञान से सम्बंधित एक बहुप्रचलित क्षेत्र है जिसमें विशेषज्ञ बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी उम्र के लोगों की भाषा की अभिव्यक्ति और उच्चारण सम्बन्धी समस्याओं का निदान करते हैं।

संगणक अनुप्रयोग (computational applications) से सम्बंधित विभिन्न क्षेत्रों जैसे– वाक्–अभिज्ञान (speech recognition), वाक्–संश्लेषण (speech synthesis), पद–निरूपण (parsing), यांत्रिक–अनुवाद (machine translation), कृत्रिम बुद्धि/प्रज्ञान (artificial intelligence) में भाषाविद् एक अभियांत्रिकी (engineering) विभाग के विशेषज्ञ के सहयोग से कई जटिल मशीन तथा सॉफ्टवेयर इत्यादि विकसित कर महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

11.12 सारांश

भाषाविज्ञान के परिचय से संबंधित इस इकाई के अध्ययन से आपको बोध हुआ कि मनुष्य ने प्राचीन समय से ही मानव भाषा की प्रकृति में एक विशेष रुचि दर्शानी शुरू की, जिसके फलस्वरूप प्रत्येक विकसित मानव संस्कृति ने भाषा के दार्शनिक, आलंकारिक, व्यावहारिक, संरचनात्मक इत्यादि पक्षों पर विचार प्रकट किये। इस क्रम में पाणिनी द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण (अष्टाध्यायी, 6–5 ई.पू.) को अभी भी सबसे बड़ी भाषावैज्ञानिक उपलब्धियों में से एक माना जाता है। आधुनिक भाषाविज्ञान जो मुख्यतः बीसवीं शताब्दी में पनपा उसे नई दिशा देने में फर्डिनेंड डी सॉस्योर के संरचनात्मक सिद्धांतों तथा कई अन्य भाषाविदों के मतों ने अहम भूमिका निभाई। तदुपरान्त धीरे–धीरे भाषाविज्ञान जगत में मनोवाद और व्यवहारवाद की दृष्टि से चिंतन होने लगा। 1957 में नोम चॉम्स्की द्वारा रचित "सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स" नमक ग्रन्थ ने भाषा के प्रति रूचि रखने वाले विद्वानों की सोच में अभूतपूर्व परिवर्तन किया। उनके द्वारा प्रस्तुत की गयी "प्रजनक व्याकरण" ने भाषाविज्ञान जगत में क्रांतिकारी बदलावों को जन्म दिया। अंततः इन सिद्धांतों के साथ संज्ञानात्मक विज्ञान (Cognitive Science) के जुड़ जाने से वर्तमान समय में भाषाविज्ञान नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है।

इसके पश्चात हम भाषा और भाषाविज्ञान की परिभाषाओं से अवगत हुए। हमने देखा कि भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र में कोई मूलभूत अंतर नहीं है और दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किये जा सकते हैं। एक अन्य दृष्टिकोण हमारे समक्ष आया कि भाषाविज्ञान को पूर्णतयः विज्ञान की श्रेणी में रखा जाए या नहीं। आपने देखा कि विज्ञान के कुछ मूलभूत मानदंडों पर खरा उतरने के बावजूद भाषाविज्ञान शाश्वत और सार्वभौमिक निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं करता। इसके अतिरिक्त भाषाविज्ञान कला के अंश को भी एक सीमा तक फलीभूत करता है। मानव भाषा के तीन मुख्य रूपों– मौखिक भाषा, लिखित भाषा और संकेत भाषा का अध्ययन करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मौखिक भाषा ही भाषा का मौलिक रूप है (न कि लिखित)। भाषा के दो आधारों– मानसिक (सूक्ष्म) एवं भौतिक (स्थूल), तथा दो आश्रयों– वक्ता एवं श्रोता की भूमिकाओं को समझा। इसके बाद हमने जाना कि कैसे भाषा मनुष्य का एक अभिन्न अंग है और क्यों पशुओं की संचार प्रणाली को भाषा शब्द से इंगित करना तर्कसंगत नहीं है। मानव भाषा के गुण जैसे– अंतरणता , यादृच्छिकता, उत्पादकता, सांस्कृतिक– संचरण, द्वैतता, वाक्छल, अधिगम्यता, प्रतिबिंबन, विविक्तता आदि इसे पशुओं के संवाद से पृथक बनाते हैं। भाषाविज्ञान के बहुप्रचलित अंगों, उदाहरण स्वरूप– स्वनविज्ञान, स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान, समाज–भाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान, तंत्रिका–भाषाविज्ञान, आदि की चर्चा के माध्यम से अपने जाना कि भाषाविज्ञान की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता मानव जीवन के लगभग सभी पक्षों से सम्बंधित है। अतः इस इकाई का उद्देश्य भाषाविज्ञान को एक सीमित दृष्टि से चित्रित करते हुए इसके कुछ विशिष्ट पक्षों पर प्रकाश डालना था, आशा है कि आप उन्हें भली–भाँति समझ पाए होंगे।

11.13 अभ्यास प्रश्न

क) निम्नलिखित प्रश्नों में सही/गलत का चयन कीजिये।

1. भाषा का मौलिक रूप लिखित भाषा है। सही/गलत

2. संकेत भाषा और शरीर की भाषा में ज्यादा अंतर नहीं है। सही/गलत
3. पाणिनी के अनुसार भाषा के मानसिक आधार को विविक्षा कहते हैं। सही/गलत
4. मस्तिष्क और भाषा के सम्बन्ध का सर्वप्रथम उल्लेख 6–5 ई.पू. मिस्र में मिला था। सही/ गलत
5. 20 वीं सदी के भाषाविज्ञान को फर्डिनेंड डी सॉस्योर द्वारा प्रतिपादित संरचनात्मक सिद्धांतों ने प्रभावित किया।सही/ गलत
6. यह आवश्यक नहीं कि भाषाविद् कई भाषाएँ बोल सकता हो। सही/गलत

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

1. भाषा के स्थूल आधार को..... एवं सूक्ष्म आधार को..... कहते हैं।
2. भाषाविज्ञान में विज्ञान के अतिरिक्त..... का अंश भी देखने को मिलता है।
3. मनोभाषाविज्ञान भाषा एवं ..... के बीच संबंध जोड़ता है।
4. स्वनविज्ञान में भाषा के..... का और स्वनिमविज्ञान में भाषा के ..... का अध्ययन किया जाता है।
5. मानव भाषा के दो गुण..... और..... इसे मुख्यतः उत्पादक एवं असीमित संरचनाएँ निर्माण करने की क्षमता देते हैं।
6. भाषाविज्ञान जगत में क्रांतिकारी परिवर्तनों को जन्म देने वाला सिद्धांत..... के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ग) इनके उत्तर दीजिए–

1. भाषाविज्ञान के उद्भव पर प्रकाश डालिये।
2. मानव एवं पशुओं की भाषाओं में अंतर स्पष्ट कीजिये।
3. भाषाविज्ञान के आठ प्रमुख अंगों का वर्णन कीजिये।
4. भाषा के दो आश्रयों का वर्णन कीजिये।
5. भाषाविज्ञान– विज्ञान है या कला ? टिप्पणी लिखिए।

11.14 कुछ अन्य उपयोगी पुस्तकें

1. तिवारी, भोलानाथ. (2013). भाषाविज्ञान (सत्तावनवां संस्करण). इलाहाबादः किताब महल
2. द्विवेदी, कपिल देव. (2014). भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र (चतुर्दश संस्करण) वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन
3. मूलर, फ्रेडरिच मैक्स. (1970). भाषा–विज्ञान (The Science of Language) (प्रथम संस्करण). (उदयनारायण तिवारी, अनुवादक) दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास
4. Chomsky, Noam- (1968)- Language and Mind- New York: Harcourt Brace Jovanovich-
5. Chomsky, Noam- (1975)- Reflections on Language- New York: Pantheon Books (Random House)-

6. Chomsky, Noam- (1980)- Rules and Representations- New York: Columbia University Press-
7. Chomsky, Noam- (1968)- Language and Mind- New York: Harcourt Brace Jovanovich-
8. Chomsky, Noam- (1975)- Reflections on Language- New York: Pantheon Books (Random House)
9. Chomsky, Noam- (1980)- Rules and Representations- New York: Columbia University Press-
10. Chomsky, Noam- (1986)- Knowledge of Language: its nature, origin and use- New York: Praeger
11. Crystal, David- (2008)- A Dictionary of Linguistics and Phonetics (Sixth ed-)- Massachusetts: Blackwell Publishing
12. Fromkin, Victoria- (Ed-)- (2000)- Linguistics: An Introduction to Linguistics Theory- Oxford: Blackwell Publishing
13. Yule, George- (2010)- The Study of Language] 4th Edition- New York Cambridge University Press-
14. Noam- (1986)- Knowledge of Language: its nature, origin and use- New York: Praeger-
15. Crystal, David- (2008)- A Dictionary of Linguistics and Phonetics (Sixth ed-)- Massachusetts: Blackwell Publishing
16. Fromkin, Victoria- (Ed-)- (2000)- Linguistics: An Introduction to Linguistics Theory- Oxford: Blackwell Publishing
17. Yule, George- (2010)- The Study of Language] 4th Edition- New York Cambridge University Press